कहानियां जो बच्चे के जीवन से जुड़ें

– रेनू उपाध्याय

वर्ष 2021 सितंबर में कक्षा शिक्षण का कार्य प्रारंभ किया। जो बच्चे कोरोना काल में संपर्क में थे उनमें तो कोई खास अंतर नहीं आया था पर किसी कारणवश जिन बच्चों जैसे संदीप, देवाशीष, अभिमन्यु, कंचन, मनीष, भावना, यश, कुमार, अविनाश आदि से संपर्क नहीं हो पाया था कक्षा शिक्षण के दौरान समझा कि यह बच्चे कक्षा दो में सीखी गई चीजों को भी भूल चुके थे। उन्हें फिर से पढ़ना सिखाना चुनौतीपूर्ण काम था समझ नहीं आ रहा था कि किस तरह से बच्चों को पुनः पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया से जोड़ा जाए ऐसे में बरखा सीरीज की किताबों का प्रयोग बहुत अच्छे परिणाम लेकर आया। आज बच्चे कुछ मात्राओं की गलती के साथ पढ़ने का प्रयास कर रहे हैं तो कुछ जैसे संदीप, देवाशीष, भावना आदि लगभग न के बराबर गलतियां कर रहे हैं। मेरे द्वारा निम्न प्रकार बरखा सीरीज पर कक्षाकक्षा में काम किया गया।

बच्चों का चयन

सर्वप्रथम बच्चे कितना याद रख पाए हैं और कितना भूले हैं यह जानने के लिए मैंने कुछ सरल किताबों को उन्हें पढ़ाकर देखा इससे बच्चों को छांटने में सहायता मिली कि कौन बच्चे समझ के साथ पढ़ रहे हैं कौन रुक–रुक कर पढ़ रहे हैं और किसे पढ़ने में परेशानी हो रही है। चयन के आधार पर अपनी कार्य योजना बनाई कि कौन से बच्चे को किस तरह और किस समय लेना है।

योजना पर कार्य

मुझे अपनी योजना इस तरह बनानी थी कि जब मैं पढ़ना सीख रहे बच्चों पर काम करूं तो जो बच्चे समझ के साथ पढ़ते हैं वह खाली न रहें। इसके लिए मैंने पुस्तकालय वाले घंटे पर काम करना प्रारंभ किया सभी बच्चों को एक साथ बैठाकर किसी एक कहानी की किताब, उसके मुखपृष्ठ, चित्र, कहानी आदि पर बच्चों से बातचीत की जाती। कहानी बच्चों को सुनाई जाती थी। उसके बाद जो बच्चे समझ के साथ पढ़ते थे उन्हें कहानी से संबंधित कार्य जैसे सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखना कहानी के पात्रों के साथ नई कहानी का निर्माण आदि लिखने व चित्र निर्माण का काम दिया। इसके बाद चयनित बच्चे अभिमन्यु, देवाशीष, संदीप, भावना, संजना, यश, नितेश अविनाश आदि को बरखा सीरीज की किताबें दीं, स्वयं से पढ़ने की कोशिश करने को कहा। किताब चित्रात्मक व सरल शब्दों में है तो बच्चे शब्दों में अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास कर रहे थे और जहां पर परेशानी हो रही थी आकर उस पंक्ति को मुझसे पढ़ने को कहते फिर खुद पढ़ते जो बच्चे बिल्कुल नहीं पढ़ पा रहे थे उनके लिए स्वयं एक पैराग्राफ पढ़कर सुनाया फिर उनसे पढ़ने को कहा इस तरह बार–बार अभ्यास से बच्चों में काफी सुधार आया अब मेरी कक्षा में सिर्फ 2 बच्चे यश कुमार और अविनाश ऐसे हैं कि जिनके लिए अलग से कार्य योजना की आवश्यकता है वह अभी अक्षरों की समझ भी नहीं बना पाए हैं।

बरखा सीरीज कैसे पढ़ना सीखने में सहायक है ?

यह किताबें बहुत ही सरल शब्दों में लिखी गई है और साथ ही चित्र भी स्पष्ट हैं जो वाक्यों से पूरी तरह मेल खाते हैं यह चित्र बच्चों को अनुमान लगाकर पढ़ने का अवसर प्रदान करते हैं। कहानी में पात्रों की पुनरावृत्ति, शब्दों की पुनरावृति आदि अक्षरों को समझने में मदद करती है। पात्रों के नाम मुखपृष्ठ अगले पन्ने और कहानी में भी बार–बार आ रहे हैं तो बच्चे सरलता से उसे पहचान पा रहे हैं। इसके अतिरिक्त एक बात जो इस सीरीज में सबसे अच्छी है वह यह कि एक ही पात्र कई कहानियों में है जिससे बच्चे अलग–अलग कहानियों को पढ़ते–पढ़ते उन पात्रों से भी जुड़ाव महसूस करने लगते हैं और तुरंत उस शब्द को पढ़ लेते हैं। जैसे जमाल और मदन। भुट्टा, पत्तल, फूल रोटी, मीठे मीठे गुलगुले, चावल आदि बहुत सी कहानियों पर बार–बार आए हैं ऐसे ही जीत और बबली गिल्ली डंडा झूला तबला जीत की पीपनी आदि मैं मुख्य पात्र हैं इससे जुड़ी हुई घटनाओं को पढ़ते–पढ़ते बच्चे पात्रों को चित्र देखकर ही पहचाने लगते हैं साथ ही कहानियां इस तरह की हैं जो बच्चों के रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी हुई है।
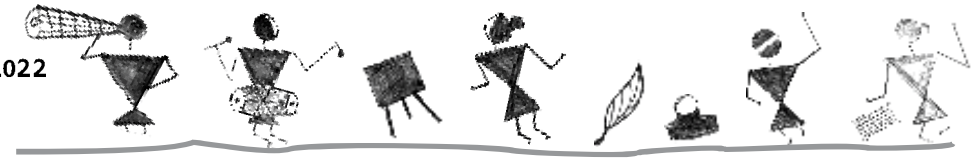
(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय, टेढ़ाघाट, खटीमा ऊधमसिंह नगर में शिक्षिका हैं।)